



बत्तख सह मछली पालन तकनीकी

पवन कुमार शर्मा*

❖ तालाब में मछली पालन के साथ बत्तख पालन एक समन्वित लाभप्रद व्यवसाय है। मछली सह बत्तख पालन से प्रोटीन उत्पादन के अलावा बत्तखों के मलमूत्र का उचित उपयोग भी होता है। ये दोनों व्यवसाय एक-दूसरे को सहयोग करने के साथ-साथ कम लागत में अधिक उत्पादन भी प्रदान करते हैं। इस विधि से मछली पालन पर होने वाले खर्च में लगभग 60 प्रतिशत तक की बचत की जा सकती है। इसके साथ ही बत्तख, तालाब की गंदगी को खाकर उसकी साफ-सफाई कर देती हैं। ये पानी में तैरने से तालाब में ऑक्सीजन का स्तर भी बढ़ा देती हैं और इस प्रकार मछलियों का भी अच्छी तरह से विकास होता है। ❖

मछली सह बत्तख पालन से प्रति हैक्टर प्रतिवर्ष 2500-3000 कि.ग्रा. बत्तख, 15,000-18000 अंडे तथा 500-600 कि.ग्रा. बत्तख के मांस का उत्पादन किया जा सकता है। इस प्रकार के मछलीपालन में न तो जल क्षेत्र में उर्वरक डालने की आवश्यकता होती है और न ही मछलियों को पूरक आहार देने की जरूरत होती है।

पोखर का चयन

मछली सह बत्तख पालन हेतु ऐसे तालाब का चयन किया जाता है, जिसकी गहराई कम से कम 1.5 मीटर से 2 मीटर हो।

तालाब में पायी जाने वाली जलीय वनस्पति को निकाल देना चाहिए। तालाब में जलीय वनस्पति, मछली पालन में निम्न बाधाएं उत्पन्न कर सकती हैं:

- मछलियों के विचरण में बाधक

*विषय वस्तु विशेषज्ञ (मात्स्यिकी), कृषि विज्ञान केन्द्र, माधोपुर, डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पश्चिम चंपारण-845454 (बिहार)

- जाल चलाने में बाधक
 - मछली के शत्रुओं को प्रश्रय
 - ऑक्सीजन संतुलन प्रभावित
 - तालाब में उपलब्ध पोषक तत्वों का शोषण
- मांसभक्षी तथा अवांछित मछलियों का उन्मूलन**

तालाब में बार-बार जाल चलाकर मांसभक्षी तथा अवांछित मछलियों को निकाल

देना चाहिए। शत-प्रतिशत मछलियों को निकालना संभव नहीं हो, तो महुआ खली 2000 से 2500 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की दर से उपयोग करने पर इन मछलियों का उन्मूलन किया जा सकता है।

चूने का प्रयोग

साधारणतः 250 से 350 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर की दर से चूने का प्रयोग करना चाहिए।



तालाब में विशेषज्ञ द्वारा खाकी कैम्पबेल प्रजाति की बत्तखों का संचय



तालाब प्रबंधन हेतु आवश्यकतानुसार खाद के घोल का प्रयोग

बत्तखों का चयन

मछलियों के साथ बत्तख पालन हेतु निम्न प्रजातियों का पालन उपयुक्त है:

- खाकी कैम्पबेल प्रजाति
- सिलहेट मेटे (भारतीय प्रजाति)
- नागेश्वरी (भारतीय प्रजाति)
- इंडियन रनर प्रजाति

यह पोषक तत्व कैल्शियम उपलब्ध करवाने के साथ निम्न प्रयोग में सहायक होता है:

- जल की अम्लीयता बढ़ने पर नियंत्रण
- विभिन्न परजीवियों के प्रभाव से मछलियों को मुक्त रखने में
- तालाब के घुलनशील ऑक्सीजन स्तर को ऊंचा उठाने में प्रभावी

मछली वृद्धि की जांच

प्रति माह जाल चलाकर मछलियों की वृद्धि, रोग और परजीवियों के आक्रमण की जांच आवश्यक है। जाल चलने से पोखर के तल के प्रबंधन में भी सहायता मिलती है।

बत्तख पालन से संबंधित व्यवस्थाएं बत्तखों के लिए बाड़ा

तालाब के ऊपर या किसी किनारे पर बत्तखों के लिए घर बना सकते हैं। तालाब पर बांस व लकड़ी से इनके लिए बाड़ा बनाना चाहिए। बाड़ा हवादार होने के साथ-साथ सुरक्षित भी होना चाहिए। बत्तख घर को हमेशा साफ-सुथरा एवं सूखा रखना चाहिए। बत्तखों का बाड़ा इतना बड़ा होना चाहिए कि प्रत्येक बत्तख को कम से कम 0.3 से 0.5 वर्गमीटर की जगह मिल सके।

दो से तीन माह में बत्तखों को आवश्यक रोगरोधक टीके लगवाने के बाद पालन हेतु उपयोग में लाना चाहिए। सामान्यतः एक



समयानुसार तालाब में मछलियों की सैपलिंग एवं हार्वेस्टिंग

मछली सह बत्तख पालन से लाभ

- मछली सह बत्तख पालन से प्रति हैक्टर प्रतिवर्ष 3500-4000 कि.ग्रा. मछली, 15000-18000 अण्डे तथा 600-750 कि.ग्रा. बत्तख के मांस का उत्पादन किया जा सकता है।
- बत्तख को 120 ग्राम दाना रोज देना जरूरी होता है, लेकिन मछली के साथ बत्तख पालन में 60 से 70 ग्राम दाना देकर आप आहार की मात्रा पूरी कर सकते हैं।
- बत्तख के पानी में तैरने से पानी का ऑक्सीजन का स्तर अच्छा रहता है। यह मछलियों के लिए बहुत जरूरी होता है। इसके साथ ही बत्तख की बीट से मछलियों को भोजन मिल जाता है। इससे उनके आहार पर भी कम खर्च होता है।
- मछली सह बत्तख पालन से तालाब में अतिरिक्त खाद डालने की आवश्यकता नहीं पड़ती है।
- मछलियां बत्तख की गिराई गई खुराक तथा विष्टा को आहार के रूप में ग्रहण करती हैं। इसके कारण अतिरिक्त कृत्रिम आहार कम मात्रा में आवश्यक होता है।
- बत्तख जलीय वनस्पति पर नियंत्रण रखती हैं।
- बत्तखों को अपने आहार का 50-60 प्रतिशत भाग जलक्षेत्र से ही प्राप्त हो जाता है।
- बत्तख कीट-पतंगों, पौधे, मेढ़क के बच्चे आदि भोजन के रूप में ग्रहण करती हैं, जो कि मछलियों के लिए हानिकारक हैं।
- तालाब में बत्तख के तैरते रहने से वायुमंडल की ऑक्सीजन निरंतर पानी में घुलती रहती है।

हैक्टर क्षेत्रफल के लिए 250-300 बत्तखें पर्याप्त होती हैं।

बत्तखों के लिए पूरक आहार

पोखर में उपलब्ध प्राकृतिक आहार बत्तखों के लिए पर्याप्त नहीं होता। इसलिए बत्तखों को पूरक आहार देना आवश्यक होता है। पूरक आहार के रूप में बत्तख को मुर्गी आहार और राइसब्रॉन 1:2 के अनुपात में 100 ग्राम प्रति बत्तख प्रतिदिन खिलाया जाता है। आहार बत्तखों के बाड़े या मेड़ पर दिया जा सकता है। बत्तख घर में 15 सें.मी. चौड़े और 5 सें.मी. लम्बे बर्तनों में पानी रखना चाहिए।

बत्तखों के स्वास्थ्य की रक्षा

प्रत्येक माह बत्तखों का स्वास्थ्य संबंधी परीक्षण करना चाहिए। बत्तख की आवाज में परिवर्तन, सुस्त चाल, कम मात्रा में आहार



बत्तख सह मछली पालन इकाई तालाब में तैरती हुई खाकी कैम्पबेल प्रजाति की बत्तख

ग्रहण करना, नाक व आंख से लगातार पानी का बहना इत्यादि लक्षण पाए जाने पर रोगी बत्तख को पोखर में नहीं जाने देना चाहिए और उस समय तुरन्त पशु चिकित्सक से सलाह लेकर उपचार करवाना चाहिए।



बत्तख सह मछली पालन इकाई तालाब पर बने हुए बत्तख घर में बत्तख